1 थिस्सलुनीकियों

लेखकः

पौलुस, जो यीशु मसीह द्वारा भेजा गया था।

समयः

50 ए.डी. और 54 ए.डी. के बीच

विषयः

अपनी दूसरी मिशनरी यात्रा के दौरान, पौलुस थिस्सलुनीके को गया। उसने वहाँ यीशु मसीह के अच्छे सन्देश (सुसमाचार) को सुनाया। वहाँ के कुछ लोगों ने यीशु मसीह को अपना लिया। उन्हों ने अपनी मूर्तियों को छोड़ दिया और यीशु के शिष्य बन गए (प्रेरितों के काम प्रे.काम 17:1-9)। इस पत्र में पौलुस उनके विश्वास को मज़बूत करने के लिए संदेश देता है। वह बतलाता है कि उनके कारण वह बहुत खुश है। इसके अलावा वह कुछ और बातें सिखाता है। इस में मुख्य विषय यीशु मसीह का दूसरी बार आना है। वह हर एक अध्याय में इसके बारे में बताता है (1:10; 2:19; 3:13; 4:13-17; 5:1-4)। यीशु दूसरी बार आएँगे और उनके विश्वासियों को खुश होना चाहिये। उन्हें इस आशा की सच्चाई के मुताबिक जीवन जीना चाहिये।

1 पौलुस और सिलवानुस और तीमुथियुस
की ओर से थिस्सलुनीकियों की
कलीसिया (चर्च) के नाम जो परमेश्वर
पिता और प्रभु यीशु मसीह में है, अनुग्रह
और शान्ति तुम्हें मिलती रहे।

2हम अपनी प्रार्थनाओं में तुम्हें याद करते
और सदा तुम सब के बारे में परमेश्वर का
धन्यवाद करते हैं। 3 हम अपने परमेश्वर
और पिता के सामने तुम्हारे विश्वास के
काम और प्रेम का परिश्रम और हमारे प्रभु
यीशु मसीह में आशा के धीरज को लगातार
याद करते हैं। 4हे भाइयो और बहनो,
परमेश्वर के प्रिय लोगो हम जानते हैं, कि तुम
चुने हुए हो। 5क्योंकि हमारा सुसंदेश तुम्हारे
यहाँ सिर्फ़ शब्दों में नहीं, लेकिन सामर्थ,
पवित्र आत्मा और बड़ी निश्चयता के साथ
पहुँचाया गया। तुम जानते हो, कि हम तुम्हारे
लिये तुम में कैसे बन गए थे। 6तुम बड़े सताव
में पवित्र आत्मा के आनन्द के साथ वचन
को मानकर हमारी और प्रभु की सी चाल

1:1 "पौलुस" - प्रे.काम 8:1-3; 13:9 "सिलवानुस" और सीलास एक ही व्यक्ति हैं-प्रे.काम 15:22,40.

"तिमोथी"- प्रे.काम 16:1-4 सीलास (और संभवतः तिमोथी) पौलुस के साथ कलीसिया (चर्च) के आरम्भ के समय में थे- प्रे.काम 17:1-4,10-14.

"जो परमेश्वर पिता और प्रभु यीशु मसीह में है"- परमेश्वर में दो व्यक्तियों के एक होने की सत्यता को दिखाता है (मत्ती 3:16-17; 28:19; यूहन्ना 10:30; 17:1-5; फ़िलि. 2:6)। विश्वासी परमेश्वर "में" - हैं। वह उनके शरणस्थान, उनके घर और उनके आत्मिक जीवन का स्त्रोत हैं। तुलना करें भजन 90:1; कुल. 3:3.

1:2 "अपनी प्रार्थनाओं"- रोमि. 1:9-10; इफ़ि. 1:16; 3:16; फ़िलि. 1:4,9; कुल. 1:3,9; 2:1.

"धन्यवाद"- रोमि. 1:8; 1 कुरि. 1:4; फ़िलि. 1:8; कुल. 1:3.

1:3 यहाँ मसीही जीवन के तीन बड़े गुण हैं और यह भी कि उन से क्या उत्पन्न होता है। सच्चा विश्वास अच्छे कार्य पैदा करता है। देखें याकूब 2:14-17,26. यहाँ यूनानी शब्द "प्रेम" "अगापे" - है। इसे समझाने के लिए 1 कुरि. 13:1-13 का अध्ययन करें। यह क्या उत्पन्न करता है, इस से ही प्रेम जाना जा सकता है और इसके व्यवहार से सच्चा प्रेम सदा दूसरों के लिए और मसीह के लिए परिश्रम करने के लिए तैयार रहता है।

"आशा"- रोमि. 5:2-5; 8:24-25 देंगे। इसलिए कि उनकी आशा परमेश्वर पर स्थिर है, जिसे उन्हें अनन्त जीवन की प्रतिज्ञा दी है - तीतुस 1:2.

1:4 "प्रिय लोगो"- रोमि. 5:8; इफ़ि. 3:18-19; कुल. 3:12; 1 यूहन्ना 3:1.

"जानते हैं"- उनके सच्चे विश्वासी होने का, प्रमाण सचमुच में बहुत अधिक था, जिससे पौलुस को निश्चय हुआ कि अनन्त जीवन के लिए परमेश्वर ने उसे चुना है।

"चुने हुए हो"- मरकुस 13:20; यूहन्ना 13:18; 15:19; रोमि. 8:33; इफ़ि. 1:4-5,11; 1 पतर. 1:2; 2:9.

1:5-10 ये पद इस बात का प्रमाण हैं जिससे पौलुस को उनके उद्धार की निश्चयता मिली। पहली बार जब उसने संदेश सुनाया, उसने पवित्र आत्मा का अनुभव किया। उन में हुए परिवर्तनों को देखा। यह परिवर्तन ऐसा था जो सताव में भी बना रहा। इस से मालूम होता है कि मसीह के लिए उनकी गवाही सत्य और सरगर्मी के साथ थी।

1:5 "हमारा सुसंदेश"- जिस संदेश को उन्हों ने फैलाया उसे यीशु मसीह ने प्रगट किया था (2:8; 3:2; गल. 1:11-12; रोमि. 1:16; 1 कुरि. 15:1-8)।

"सामर्थ"- प्रे.काम 1:8; 1 कुरि. 2:4-5; कुल. 1:29.

"पवित्र आत्मा"- मत्ती 3:16-17; यूहन्ना 14:16-17; प्रे.काम 1:4; इफ़ि. 5:18. परमेश्वर के आत्मा के वातावरण में पौलुस जीवन जीता था और दूसरों की सेवा किया करता था।

"बड़ी...साथ"- वह और वे दोनों ही इस बात के कायल थे, कि परमेश्वर उनके बीच में कार्य कर रहे हैं।

"कैसे"- 2:5-12. प्रे.काम 20:18-20,33-35 से तुलना करें।

1:6 "बड़े सताव"- 2:14; प्रे.काम 17:5-10. इस बात से उन्हों ने सुसंदेश से अपना मुँह नहीं मोड़ा। परमेश्वर ने जिन्हें चुना है वे लोग अपने मार्ग से कभी नहीं भटकेंगे।

"आनन्द"- प्रे.काम 8:8; 13:52; 16:34; रोमि. 14:17. जो लोग सुसंदेश पर विश्वास करते हैं, उन्हीं के जीवन में परमेश्वर का आत्मा आनन्द उत्पन्न कर सकता है।

1:6 "हमारी...चाल"- मसीही अगुवों को ऐसे जीना चाहिए कि सभी सावधानी से उनका अनुकरण करें। 1 कुरि. 4:16; 11:1; फ़िलि. 3:17; 2 थिस्स. 3:7,9; 1 तीमु. 1:16; 4:12; तीतुस 2:7; इब्रा. 6:12; 13:7; 1 पतर. 5:3.

चलने लगे। 7इसलिए तुम मकिदुनिया और
अखाया के सब विश्वासियों के लिये एक
नमूना बन गए थे। 8क्योंकि तुम्हारे यहाँ से न
केवल मकिदुनिया और अखाया में प्रभु का
संदेश सुनाया गया, लेकिन तुम्हारे विश्वास
की, जो परमेश्वर पर है हर जगह ऐसी चर्चा
हो रही है कि हमें कहने की ज़रूरत ही नहीं।
9क्योंकि वे आप ही हमारे विषय में बताते
हैं कि तुम्हारे पास हमारा आना कैसा हुआ
और तुम क्यों मूरतों से परमेश्वर की ओर
मुड़ गए ताकि जीवित और सच्चे परमेश्वर
की सेवा करो। 10और उनके बेटे के स्वर्ग
पर से आने की बाट जोहते रहो जिन्हें उन्हों
ने मरे हुओं में से जिलाया, अर्थात् यीशु की,
जो हमें आने वाले दण्डसे बचाते हैं।

2 हे भाइयो-बहनो, तुम आप ही जानते
हो कि हमारा तुम्हारे पास आना

1:7 "मकिदुनिया और अखाया"- जिसे आज 'यूनान' जाना जाता है, उस समय थिस्सलुनीके और मकिदुनिया में आते थे।

"नमूना"- संसार के सब से बड़े व्यक्ति को आदर्श बनाकर, सभी विश्वासियों के लिए वह एक आदर्श बन गया (1 कुरि. 11:1)। वे पौलुस के समान जीवन जीने लगे और दूसरों के लिए भी आदर्श बन गए।

1:8 "हर जगह ऐसी चर्चा हो रही है"- जैसा सभी विश्वासियों को होना चाहिए, वे खुले रूप में मसीह के गवाह थे।

1:9 "मूरतों" - वहाँ अधिक विश्वासी गैर यहूदी थे जैसा अभी भी है। उस समय भी मूर्तिपूजा एक आम बात थी। उनके परिवर्तन का एक स्पष्ट चिन्ह यह था कि उन्हों ने अपनी मूर्तियों को फ़ेंक दिया और सच्चे परमेश्वर की ओर मुड़ गए। ऐसा हमारे साथ भी होना चाहिए।

"जीवित और सच्चे परमेश्वर" - पौलुस इस परमेश्वर और "ईश्वरों" में अन्तर करने के लिए इन शब्दों का उपयोग करता है। वे मूर्तियाँ जिन्हें थिस्सलुनीके के विश्वासी पहले पूजते थे और बहुत से लोग उस समय भी उनकी पूजा कर रहे थे। 1 कुरि. 8:5-6; भजन 115:3-8; यशा. 44:20; यिर्म. 10:14; रोमि. 1:22-23,25. यदि हम चाहते हैं कि सत्य और जीवित परमेश्वर हमारे परमेश्वर हों, तो जैसे थिस्सुलनीकियों ने किया हमें भी करना चाहिए। एक ही समय में हम सच्चे परमेश्वर और मूर्तियों को नहीं मान सकते।

1:10 "बाट जोहते"- 1 कुरि. 1:7; तीतुस 2:13; इब्रा. 9:28. थिस्सलुनीकियों को लिखे दोनों पत्रों में मसीह का दोबारा आना एक महत्वपूर्ण विषय है - यह नए नियम का आवश्यक विषय है - 2:19; 3:13; 4:13-18; 2 थिस्स. 1:7; 2:1; मत्ती 24:30; यूहन्ना 14:3; प्रे.काम 1:11; प्रका. 1:7.

"मरे हुओं में से जिलाया"- मत्ती 28:6; प्रे. काम 1:3; 2:24-32; 1 कुरि. 15:3-8.

"आने वाले दण्ड"- रोमि. 1:18; 2:5; इफ़ि. 5:6; कुल. 3:6; प्रका. 6:16. परमेश्वर के क्रोध पर नोट्स गिनती 25:3; भजन 90:7-11; यूहन्ना 3:36; रोमि. 1:18. जब परमेश्वर संसार का न्याय करने आएँगे तब उनका क्रोध प्रगट होगा। क्रोध, उद्धार का उल्टा है - 5:9. इसका अर्थ है अनन्तकालिक दण्ड- 2 थिस्स. 1:7-10; मत्ती 25:46. यीशु ही हैं जो विश्वासियों को इस क्रोध से बचाते हैं। रोमि. 5:9 देखें। बाईबल के कुछ ज्ञाताओं ने इस भाग के विषय में अपने विचार प्रगट किए हैं। वह यह कि जिस क्रोध के विषय वह कहता है, वह इस युग के अन्त में होने वाली पीड़ा का समय है (मत्ती 24:21)। बाईबल में महान संकट काल को परमेश्वर का क्रोध नहीं कहा गया है। वास्तव में यह परमेश्वर के विरोध में शैतान और बुरे मनुष्यों का क्रोध है। मत्ती 24:29; प्रका. 6:12-17; 13:7,15-17. यहाँ या कहीं और पौलुस यह नहीं कहता है कि विश्वासी इस से छुड़ा लिए जाएँगे। हमें यह भी समझना चाहिए कि चाहे चर्च (कलीसिया) महासंकट काल के समय में होकर जाए या नहीं, किसी न किसी प्रकार के सच्चे विश्वासी उस समय संकट काल में रहेंगे ही। प्रका. 12:17; 13:7 देखें। यदि संकट काल परमेश्वर का क्रोध है, तो इसका अर्थ यह हुआ परमेश्वर का क्रोध उन सन्तों पर आएगा, जो मृत्यु तक ख्रीष्ट विरोधी का सामना करेंगे। क्या हम इसकी संभावना की कल्पना कर सकते हैं? निश्चित रीति से "परमेश्वर का क्रोध" एक ऐसे अनुभव (समय) की ओर संकेत करता है जो महासंकट काल से अधिक भयानक है।

बेकार न हुआ। 2जैसा कि तुम जानते हो, कि पहिले फ़िलिप्पी में दुःख उठाने और उपद्रव सहने पर भी हमारे परमेश्वर ने हमें ऐसी हिम्मत दी, कि हम परमेश्वर का अच्छा-संदेश भारी विरोध के होते हुए भी तुम्हें सुनाएँ। 3क्योंकि हमारा उपदेश न भ्रम से है और न अशुद्धता से और न छल के साथ। 4किन्तु जैसा परमेश्वर ने हमें योग्य ठहराकर सुसमाचार सौंपा, हम वैसा ही बताते है, और इस में मनुष्यों को नहीं, परन्तु परमेश्वर को, जो हमारे मनों को जाँचते हैं, खुश करते हैं। 5जैसा कि तुम जानते हो, कि हम न तो कभी चापलूसी की बातें किया करते थे और न लालच के लिये बहाना बनाया करते थे। परमेश्वर हमारे गवाह हैं। 6हालांकि हम मसीह के प्रेरित होने के कारण तुम पर बोझ डाल सकते थे, तौभी हम मनुष्यों से आदर नहीं चाहते थे, और न तुम से, न और किसी से। 7परन्तु जिस तरह माता अपने बालकों का पालन-पोषण करती है, वैसे ही हम ने भी तुम्हारे बीच में रहकर कोमलता दिखाई है, 8और वैसे ही हम तुम्हारी लालसा करते हुए, न केवल परमेश्वर का सुसमाचार, पर अपनी जान भी तुम्हें देने को तैयार थे, इसलिये कि तुम हमारे लिए कीमती हो गए थे। 9हे भाइयो बहनो, तुम हमारी मेहनत और कष्ट को याद रखते हो, कि हम ने इसलिये रात दिन मेहनत करते हुए तुम में परमेश्वर का सुसमाचार दिया, कि तुम में से किसी पर भार न हो।

10तुम आप ही गवाह हो और परमेश्वर भी, कि तुम्हारे बीच में जो विश्वास रखते हो हम कैसी पवित्रता और निर्दोषता से रहे। 11तुम जानते हो, कि जैसा पिता अपने बच्चों के साथ बर्ताव करता है, वैसे ही तुम में से हर एक को भी उपदेश करते, और शान्ति देते और समझाते थे। 12कि तुम्हारा चरित्र परमेश्वर के योग्य हो, जो तुम्हे अपने राज्य और महिमा में बुलाते हैं।

2:1 "आना बेकार"- 1:5-10 इस बात को स्पष्ट कर देता है।

2:2 "फ़िलिप्पी"- प्रे.काम 16:19-24.

"विरोध"- प्रे.काम 17:5-10.

2:3 यह संभव है कि थिस्सुलुनीके में कोई व्यक्ति पौलुस का विरोध कर रहा था। 2 कुरि. 1:12; 2:17; 4:2.

2:4 "सुसमाचार सौंपा"- 1 कुरि. 4:1; गल. 2:7; इफ़ि. 3:7-8; 1 तीमु. 1:11-12.

"मनुष्यों को नहीं"- गल. 1:10.

"मनों को जाँचते हैं"- 1 शमू. 16:7; भजन 66:10; 139:1,23,24; नीति. 21:2; यिर्म. 17:10; प्रका. 2:23.

2:5 प्रे.काम 20:33-35; 2 कुरि. 7:2 कुछ प्रचारक धन के पीछे है और लोगों से प्राप्त करने के लिए एक दीनता और नम्रता का मुखौटा चढ़ाए रहते हैं - 1 तीमु. 6:5. पौलुस उनके समान नहीं था। वह यह जानता था कि लोभी और धोखेबाज़ के ऊपर परमेश्वर का क्रोध बना रहता है - इफ़ि. 5:5-6; कुल. 3:5-6; 1 तीमु. 6:9,11.

"परमेश्वर...हैं"- पद 10 यह एक जोरदार तरीके से गंभीर बात को कहना है।

2:6 "बोझ"- 1 कुरि. 9:7-15; 2 कुरि. 11:9.

"मनुष्यों से"- यूहन्ना 5:44; रोमि. 2:29.

2:7 पद 11; गल. 4:19.

2:8 2 कुरि. 7:3; 12:15; 1 यूहन्ना 3:16 ।

2:9 प्रे.काम 18:3; 2 कुरि. 11:9; 2 थिस्स. 3:8.

2:10 वह यह अपने लिए, इस तरह की बातें नहीं कर रहा है। वह उनके और सुसमाचार के लिए यह कह रहा है। 2 कुरि. 1:12; 11:16-21; 12:19 सुसमाचार की सत्यता के विषय में वह नहीं चाहता था, कि उन्हें कुछ सन्देह हो।

2:11-12 उनके लिए वह एक माँ और पिता के समान था - पद 7. 1 कुरि. 4:15; और गल. 4:19 से तुलना करें। सुसंदेश देने वाले और पास्टरों का व्यवहार विश्वासियों के साथ कैसा होना चाहिए, इस में वह आदर्श था।

2:12 "चरित्र(चाल-चलन)"- इफ़ि. 2:10 के नोट्स देखें।

"परमेश्वर के योग्य"- इफ़ि. 4:1; फ़िलि. 1:27; कुल. 1:10 देखें।

"राज्य और महिमा"-मत्ती 4:17; 25:34; यूहन्ना 17:22,24; रोमि. 5:2; 8:17; 14:17; कुल. 1:12-13; इब्रा. 12:28; 2 पतर. 1:11.

"बुलाते हैं"- रोमि. 1:6; 8:30.

13इसलिये हम भी परमेश्वर का धन्यवाद
निरन्तर करते हैं, कि जब हमारे द्वारा
परमेश्वर के सुसमाचार का वचन तुम्हारे
पास पहुँचा, तो तुम ने उसे मनुष्यों का नहीं,
परन्तु परमेश्वर का वचन समझकर (और
सचमुच यह ऐसा ही है) स्वीकार किया।
वह वचन तुम में, जो विश्वास रखते हो,
प्रभावशाली है। 14हे भाइयो बहनो, तुम
परमेश्वर की उन कलीसियाओं के समान
जीवन जीने लगे, जो यहूदिया में मसीह यीशु
में हैं, क्योंकि तुम ने भी अपने लोगों से
वैसा ही दुःख पाया, जैसा उन्हों ने यहूदियों
से पाया था, 15जिन्होंने प्रभु यीशु को और
भविष्यवक्ताओं को भी मार डाला और
हम को भी सताया। परमेश्वर उन से खुश
नहीं और वे सब मनुष्यों का विरोध करते
हैं। 16क्योंकि वे गैर यहूदियों से बातें करने
से हमें रोकते हैं, कि सदा अपने पापों को
पैमाना भरते रहे, किन्तु उन पर परमेश्वर
की डरा देने वाली सज़ा आ चुकी है।

17हे भाइयो बहनो, हम थोड़ी देर के लिये
मन में नहीं वरन प्रगट में तुम से अलग हो
गए थे, इसलिए हम ने बड़ी चाह के साथ
तुम्हारा मुँह देखने के लिए और भी अधिक
कोशिश की। 18इसलिए हम ने (अर्थात् मुझ
पौलुस ने) एक बार नहीं, वरन् दो बार तुम्हारे
पास आना चाहा, परन्तु शैतान हमें रोके
रहा। 19हमारी आशा या आनन्द या उल्लास
का मुकुट क्या है? क्या हमारे प्रभु यीशु के
सामने उनके आने के समय तुम ही न होगे?
20हमारी महिमा और आनन्द तुम ही हो।

3 1,2इसलिये जब हम से और न रहा
गया, तो हम ने यह सोचा कि एथेन्स में

2:13 "परमेश्वर के सुसमाचार"- इसका यहाँ अर्थ है मसीह का सुसंदेश। गल. 1:11-12 देखें और 2 तीमु. 3:16 से तुलना करें।

"प्रभावशाली है"- फ़िलि. 1:6; 2:13 से तुलना करे। भलाई के लिए, परमेश्वर का वचन लोगों के मन और हृदय में कार्य करने वाला बल है - भजन 119:11; इब्रा. 4:12. इसलिए हम परमेश्वर की ओर से कुल. 3:16 में निर्देष मिला है।

2:14 "जीवन जीने लगे"- 1:6.

"तुम ने भी अपने लोगों से"- यूनानी। विश्वास न करने वाले यूनानी लोगों ने विश्वास करने वाले यूनानियों को सताया जैसे अविश्वासी यहूदियों ने विश्वासी यहूदियों को सताया था। इसी प्रकार से इस पृथ्वी पर लोग मसीह के लोगों को सताते हैं।

2:15"भविष्यवक्ताओं"- मत्ती 23:37; प्रे. काम 7:52.

"मार डाला"- यहूदियों ने यीशु को रोमी लोगों के सुपुर्द कर दिया था और उसकी मृत्यु की मांग की थी। रोमी सिपाहियों ने वास्तव में उसे मारा था। यहूदी उसकी मौत के ज़िम्मेदार थे (मत्ती 27:1-2,22,25; प्रे.काम 2:23; 3:13-15)।

"हम ...सताया"- प्रे.काम 13:45,50; 14:2,5,19; 17:5.

2:16 "गैरयहूदी"- प्रे.काम 13:45,50; 20:3; 21:27; 22:21; 22:21-22.

2:17-18 "अलग हो गए"- प्रे.काम 17:10 केवल थोड़े समय के लिए वह थिस्सुलुनीके में था। इस से पहले कि उन्हें सिखाने का उसे अवसर मिले, उसे उन विश्वासियों को छोड़ना पड़ा था। वह उन से बहुत प्रेम करता था (पद 7,11) और उन से भेंट करना चाहता था।

2:18 "शैतान हमें रोके रहे"- रोमि. 1:13 से तुलना करें। हमें यह नहीं मालूम कि पौलुस किन परिस्थितियों की ओर संकेत करता है।

हमें यह मालूम है कि शैतान निरन्तर परमेश्वर के सेवकों का विरोध करता है। ऐसा भी लगता है कि वह योजना को बिगाड़ने और देरी करने का कार्य भी कर सकता है। शैतान के विषय में 1 इति. 21:1; मत्ती 4:1-10 और यूहन्ना 8:44 के नोट्स देखें।

2:19-20 फ़िलि. 4:1 देखें। जिन्होंने मसीह पर विश्वास किया उनके बारे में वह गर्व कर रहा था। इस से उसे कितना आनन्द मिलता होगा।

"मुकुट"- वह आत्माओं के जीतने के प्रतिफल की बात करता है। यह प्रयासों के द्वारा मसीह की उपस्थिति को देखना है। भजन 126:1; 5:6; यूहन्ना 4:36.

3:1 "एथेन्स"- पौलुस और उसके साथी थिस्सलुनीके से बीरिया और वहाँ से एथेन्स गए (प्रे.काम 17:10,15)

अकेले रह जाएँ, और हम ने तीमुथियुस को जो मसीह के सुसमाचार में हमारा भाई और परमेश्वर का सेवक है, इसलिये भेजा, कि वह तुम्हें स्थिर करे और तुम्हारे विश्वास के विषय में तुम्हें समझाए, 3कि कोई इन मुसीबतों के कारण डगमगा न जाए, क्योंकि तुम आप जानते हो, कि हम इन्हीं के लिये ठहराए गए हैं। 4क्योंकि पहले भी, जब हम तुम्हारे यहाँ थे, तो तुम से कहा करते थे, कि हमें परेशानियाँ उठानी होंगी और ऐसा ही हुआ है और तुम जानते भी हो। 5इस कारण जब मुझ से और न रहा गया, तो तुम्हारे विश्वास का हाल जानने के लिए उसे भेजा, कि कहीं ऐसा न हो, कि परीक्षा करने वाले ने तुम्हारी परीक्षा की हो और हमारा परिश्रम बेकार हो गया हो।

6लेकिन अभी तीमुथियुस ने जो तुम्हारे पास से हमारे यहाँ आकर तुम्हारे विश्वास और प्रेम का सुसमाचार सुनाया और यह भी बताया कि तुम सदा प्रेम के साथ हमें याद करते हो और हमें देखने की इच्छा रखते हो, जैसा हम भी तुम्हें देखने की चाह रखते हैं। 7इसलिये हे भाइयो बहनो, हम ने अपने सारे कष्टों और सताव में तुम्हारे विश्वास से तुम्हारे विषय में शान्ति पाई। 8,9अब यदि तुम प्रभु में बने रहो तो हम जीवित हैं। जैसी खुशी हमें तुम्हारे कारण अपने परमेश्वर के सामने है, उसके बदले तुम्हारे विषय में हम कैसे परमेश्वर की बड़ाई करें? 10हम रात दिन बहुत ही प्रार्थना करते रहते हैं, कि तुम्हारा मुँह देखें और तुम्हारे विश्वास की कमी पूरा करें।

3:2 "तिमोथी"- 1:1; प्रे.काम 16:1.

"स्थिर करें"- वह सदा इस बात के लिए चिन्तित था, कि विशेषकर नए विश्वासी अपने विश्वास में मजबूत हों और मसीह के लिए जीने के लिए प्रोत्साहित किए जाएँ। पद 13; 2:12; 2 थिस्स. 2:17; प्रे.काम 14:22; 2 कुरि. 12:19; इफ़ि. 3:16; कुल. 1:11; 2:7.

3:3 "इन मुसीबतों"- 2:14.

"हम...हैं"- इस सत्य पर सावधानी से ध्यान दें और यूहन्ना 16:33; प्रे.काम 14:22; 1 पतर. 4:1,12 से तुलना करें।

3:4 अपने अनुभव और परमेश्वर के वचन के आधार पर उसने सिखाया, कि क्या होगा। सुसमाचार की आशीषों के विषय बताते समय उसने विश्वासी पर आने वाली समस्याओं के बारे में उन्हें अनजान नहीं रखा। प्रे.काम 20:20,27 से तुलना करें।

3:5 "और न रहा गया"- 1 कुरि. 15:2; गल. 4:11 से तुलना करें। मसीह में सच्चा विश्वास विश्वासियों की सहायता करता है कि वे परीक्षाओं, परखे जाने और सताए जाने पर जयवन्त हों - यूहन्ना 10:39; 1 यूहन्ना 5:4-5 आदि। पौलुस जानता था कि थिस्सुलुनीके के लोग काफ़ी समस्याएँ सह रहे थे। क्या परखे जाने के समय उनका विश्वास वास्तविक ठहरेगा? वह यह जानना चाहता था।

"परीक्षा करने वाले"- शैतान (मत्ती 4:1-10)।

3:6 "विश्वास और प्रेम"- 1:3.

3:7 "विश्वास से तुम्हारे विषय में शान्ति पाई"- वह यह समझ गया था कि वे अपने विश्वास की परीक्षा में सफ़ल हो गए और इसलिए सिद्ध कर दिया कि वह सच्चा विश्वास था (1 पतर. 1:6-7)।

3:8 "बने रहो"- 1 कुरि. 15:58; गल. 5:1; इफ़ि. 6:14; कुल. 2:5; याकूब 5:8; 1 पतर. 5:9-10; इफ़ि. 3:8.

"हम जीवित हैं"- पौलुस यह महसूस करता था कि उसका जीवन उन से बंधा हुआ है। यदि वे मसीह में उसके साथ विश्वासयोग्यता से जीवित थे तो वह जीवित था। 1 कुरि. 12:24-26 से तुलना करें।

"खुशी"- 1:2 उसकी सेवकाई के द्वारा ये थिस्सुलीनीके के विश्वासी शिष्य बन गए थे। वह परमेश्वर के प्रति कृतज्ञ था क्योंकि उसे मालूम था कि परमेश्वर के द्वारा ही यह संभव है।

3:10 "प्रार्थना करते रहते हैं"- 1:2-3.

"तुम्हारे ...करें"- उन्हों ने मसीह पर विश्वास किया था और सताव के बावजूद स्थिर रहे। पौलुस यह नहीं दिखाता कि उनका विश्वास परिपक्व और सिद्ध था। उन्हें विश्वास में उन्नति करने की आवश्यकता थी - लूका 17:5; 2 कुरि. 10:15; 2 थिस्स. 1:3. इसके लिए उन्हें परमेश्वर के वचन से और सीखना था - रोमि. 10:17; इफ़ि. 4:12-15. पौलुस उन से भेंट करना और यह शिक्षा देना चाहता था।

11 अब हमारे परमेश्वर और प्रभु यीशु,
तुम्हारे यहाँ आने के लिये हमारी अगुवाई
करें। 12 और प्रभु ऐसा करें कि जैसा हम
तुम से प्रेम रखते हैं वैसा ही तुम्हारा प्रेम
भी आपस में और सब लोगों के लिए
बढ़ता जाए। 13 ताकि जब हमारे प्रभु
यीशु अपने सब पवित्र लोगों के साथ
आएँ, तो वह तुम्हारे मनों को हमारे
पिता परमेश्वर के सामने पवित्रता में
दोष-रहित ठहराएँ।

4 अन्त में हे भाइयो-बहनो, हम तुम
से बिनती करते हैं, और तुम्हें प्रभु
यीशु में समझाते हैं, कि जैसे तुम ने हम
से खरा जीवन जीना, और परमेश्वर
को सन्तुष्ट करना सीखा है, और जैसा
तुम्हारा जीवन है, वेसे ही और भी बढ़ते
जाओ। 2 क्योंकि तुम जानते हो, कि हम
ने प्रभु यीशु की ओर से तुम्हें कौन कौन
सी आज्ञा पहुँचाई।

3 क्योंकि परमेश्वर की इच्छा यह है, कि
तुम पवित्र बनो अर्थात् व्यभिचार से बचे
रहो। 4 कि तुम में से हर एक पवित्रता और
आदर के साथ अपने जीवन साथी को प्राप्त
करना जाने। 5 और यह काम अभिलाषा
से (भावनाओं में बह कर) नहीं, और न
उन लोगों की तरह, जो परमेश्वर को नहीं
जानते, 6 कि इस बात में कोई अपने भाई
को न ठगे, और न उसका अपराध करे,
क्योंकि प्रभु इन सब बातों का बदला लेने
वाले हैं, जैसा कि हम ने पहिले तुम से कहा
था, और चेतावनी भी दी थी। 7 क्योंकि
परमेश्वर ने हमें अशुद्ध होने के लिये नहीं,
परन्तु पवित्र होने के लिये बुलाया है। 8 इस

3:11 "तुम्हारे यहाँ ...करें"- 2:18. व तुलना करें।
3:12 "तुम्हारा...जाए"- 4:9-10; 2 थिस्स. 1:3; यूहन्ना 13:34; रोमि. 12:9-10; 1 कुरि. 13:1,13; रोमि. 12:9-10; 1 कुरि. 13:1,13; 1 यूहन्ना 2:5,10; 3:11,14,16-18.
3:13 "पवित्र लोगों"- का अर्थ स्वर्गदूत या विश्वासी या दोनों ही हो सकते हैं (4:14; मत्ती 25:31; यहूदा 14; प्रका. 19:14)

"मनों को"- विश्वासी की एक बड़ी आवश्यकता आत्मिक बल है। पौलुस ने यह प्रार्थना परमेश्वर की इच्छा में की, कि वे इसे प्राप्त करें। देखे इफ़ि. 3:16.

"पवित्रता में निर्दोष"- 5:23; 1 कुरि. 1:8; इफ़ि. 5:26-27; फ़िलि. 2:15; तीतुस 2:14; 2 पतर. 3:14.
4:1 "परमेश्वर...करना"- रोमि. 14:18; 2 कुरि. 5:9; इफ़ि. 5:10; कुल. 1:10. किसी और तरीके का जीवन किसी विश्वासी को नहीं जीना चाहिए। हमारा पूरा उत्तरदायित्व यह है कि परमेश्वर को प्रसन्न करें। प्रत्येक बात में हमें अपने आप से यह पूछना चाहिए "क्या यह सचमुच में परमेश्वर को प्रसन्न करता है?" तब हम दाऊद के समान, जो परमेश्वर के मन के अनुसार था, बन सकते हैं - 1 शमू. 13:14 में नोट्स देखें।
4:2 "प्रभु यीशु में"- उसे मालूम था कि वह मसीह का राजदूत है (2 कुरि. 5:20)। सुसंदेश और वह शिक्षा जो वह कलीसियाओं में दे रहा था, यीशु ही ने उसे दीं थी - 2:13; गल. 1:11-12. इसलिए स्वर्ग के अधिकार के साथ वह बोल सकता था।
4:3 "तुम पवित्र बनो"- 3:13; 5:23; यूहन्ना 17:17-19; रोमि. 6:19; 2 कुरि. 7:1; इब्रा. 12:14; 1 पतर. 1:15-16.

"व्यभिचार(अनैतिकता)"- 1 कुरि. 6:18-20; गल. 5:19; इफ़ि. 5:3; कुल. 3:5.
4:4-5 "आदर के"- अनैतिकता अनादर और शर्म लाती है।

"जीवन साथी"- किसी भी व्यक्ति का शरीर, उसकी आत्मा का पात्र है और आत्मा को उसको गुलाम नहीं बनना है, किन्तु आत्मा का उस पर नियंत्रण होना चाहिए।
4:5 "उन...जानते"- इफ़ि. 4:17-20.
4:6 व्यभिचार एक ऐसा अपराध है जो करने वाले के साथ ही नहीं किन्तु वैवाहिक साथी के साथ है।

"प्रभु...वाले हैं"- रोमि. 12:19 वह निश्चित समय पर दण्ड देंगे - इफ़ि. 5:5-6; कुल. 3:6; इब्रा. 13:4.
4:7 "पवित्र होने के लिए बुलाए गए"- रोमि. 1:7; 1 कुरि. 1:2; तीतुस 2:14; इब्रा. 3:1; 12:14; 1 पतर. 1:15.

कारण जो इसे तुच्छ जानता है, वह मनुष्य को नहीं, परन्तु परमेश्वर को तुच्छ जानता है, जो अपना पवित्र आत्मा तुम्हें देते हैं।

9किन्तु भाईचारे के प्यार के बारे में यह ज़रूरी नहीं, कि मैं तुम का कुछ लिखूँ, क्योंकि आपस में प्रेम रखना तुम ने आप ही परमेश्वर से सीखा है। 10तुम सारे मकिदुनिया के सब भाई बहनों के साथ ऐसा करते भी हो। हे भाई बहनो, हम तुम्हें समझाते हैं, कि और भी बढ़ते जाओ, 11जैसी हम ने तुम्हें आज्ञा दी, वैसे ही चुपचाप रहने और अपना-अपना काम-काज करने, और अपने-अपने हाथों से कमाने की कोशिश करो, 12ताकि बाहर वालों से तुम्हें आदर (इज़्ज़त) मिले, और तुम्हें किसी वस्तु की कमी न हो।

13हे भाइयो बहनो, हम नहीं चाहते, कि तुम उनके विषय में जो सोते हैं (या मर चुके हैं), अनजान रहो और उन लोगों के समान विलाप करो जिन्हें आशा नहीं।

14क्योंकि यदि हम विश्वास करते हैं, कि यीशु मरे और जी भी उठे, तो वैसे ही परमेश्वर उन्हें भी जो यीशु में सो गए हैं, उन्हीं के साथ ले आएँगे। 15हम प्रभु के

4:8 "मनुष्य...जानता"- पौलुस की शिक्षा प्रभु यीशु मसीह के द्वारा थी (पद 2)। इसलिए उसकी शिक्षा के तज देने का अर्थ था उस परमेश्वर को तुच्छ जानना जिसने उसे भेजा था।

"पवित्र आत्मा"- 1 कुरि. 6:19; गल. 4:6; इफ़ि. 1:13; यूहन्ना 14:16-17.

4:9 "भाईचारे की प्रीति"- वह प्रेम है जो एक दूसरे के लिए है। एक आत्मिक पिता के वे आत्मिक भाई और बहन हैं। इस सत्य के आधार पर उनको व्यवहार करना चाहिए - यूहन्ना 13:34 आदि।

"परमेश्वर से सीखा है"- यशा. 54:13; यूहन्ना 6:45; 1 यूहन्ना 2:27 से तुलना करे। भजन 25:4-5 देखें।

4:10 "मकिदुनिया"- प्रे.काम 16:9 उस राज्य में थिस्सलुनीके था।

"और भी बढ़ते जाओ"- 3:12; 4:1 जब तक इफ़ि. 4:12-15 एक वास्तविकता न बन जाए मसीही जीवन निरन्तर बढ़ने वाला जीवन होना चाहिए।

4:11 "अपने-अपने हाथों से कमाने"- जैसा आज भी कुछ लोग सोचते हैं, उस समय भी सोचते थे कि शारीरिक श्रम का कार्य छोटा है। महान प्रेरित ऐसा नहीं सोचता था (2:9; प्रे.काम 18:3; 20:34-35)। वह यह भी नहीं चाहता था कि दूसरे ऐसा सोचें।

"कोशिश"- लोगों की बहुत आकांक्षाएँ होती है, कुछ स्वार्थमय (गल. 5:20; फ़िलि. 1:17; याकूब 3:14)। पौलुस हमें एक लक्ष्य दिखाता है, जो सही है। परमेश्वर ने हम में से प्रत्येक को वहाँ रखा है जहाँ वह चाहते हैं और एक कार्य करने के लिए दिया है। हम शान्ति से इस कार्य में लग जाएँ और दूसरों के कार्यों में हाथ न डालें।

4:12 "कमी न हो"- आलस्यपन और दूसरों के कामों में हाथ डालने से कुछ लाभ नहीं होने का नीति. 24:29-34.

4:13-18 यीशु मसीह के द्वितीय आगमन से सम्बधित भविष्यद्वाणियाँ मत्ती 24:27-31,36; यूहन्ना 14:3; प्रे.काम 1:11; 1 कुरि. 15:23 (51-54); 2 थिस्स. 1:7; 2:1,8; इब्रा. 9:28; 1 यूहन्ना 2:28; प्रका. 1:7; 19:11-16; 22:12.

4:13 "जो सोते हैं"- यह भाव प्रायः बाईबल में मृत्यु की ओर संकेत के लिए है। यूहन्ना 11:11,14; प्रे.काम 7:60. "सोना" दिखाता है कि नींद से जगने का एक समय या पुनरूत्थान आने वाला है। इस "सोने" में शरीर ही सोता है, आत्मा नहीं। देखें प्रका. 6:9-11.

"उन लोगों के समान विलाप करो"- विश्वासी जान सकते हैं कि मृत्यु अन्त नहीं है। पुनरूत्थान है और पहले से जो पहले जा चुके हैं उनके साथ मिलन भी।

"आशा नहीं"- मसीह के बिना भविष्य के विषय में कोई आशा नहीं (इफ़ि. 2:12)

4:14 "वैसे ही"- परमेश्वर ने जो प्रगट किया है, उनके द्वारा प्रगट की दूसरी बातों पर विश्वास करने के लिए भी हमें योग्य बनना चाहिए।

"यीशु में सो गए है"- आने पर यीशु उन विश्वासियों की आत्मा को ले आएँगे जो मर चुके हैं।

"सो गए हैं, उसी के साथ ले आएँगे"- मत्ती 27:50; 28:6; प्रे.काम 1:3; रोमि. 1:4; 1 कुरि. 15:3-8.

वचन के अनुसार तुम से यह कहते हैं, कि हम जो जीवित है और प्रभु के आने तक बचे रहेंगे तो सोए हुओं (मर चुके लोगों) से कभी आगे न बढ़ेंगे। 16प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेंगे। उस समय ललकार और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा और परमेश्वर की तुरही फूँकी जाएगी और जो मसीह में मरे हैं, वे पहिले जी उठेंगे।

17तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे, उनके साथ बादलों पर उठा लिए जाएँगे, ताकि हवा में प्रभु से मिलें और इस तरह से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे। 18तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे, उनके साथ बादलों पर उठा लिए जाएँगे, कि हवा में प्रभु से मिलें और तरह से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे। इन बातों से एक दूसरे को शान्ति दिया करो।

5 हे भाइयो-बहनो, इसकी ज़रूरत नहीं, कि समयों और युगों के विषय में तुम्हें कुछ सिखाया जाए। 2क्योंकि तुम आप ठीक जानते हो कि जैसे रात को चोर आता

4:15 "प्रभु के वचन"- यह संभव है कि यीशु ने उस रहस्य को प्रगट किया था वह यह कि मसीह में मरे पहले जी उठेंगे - जिस प्रकार से दूसरी सच्चाईयों को उन्हों ने प्रगट किया था यह पौलुस को सीधे बताया। गल. 1:11-12. हालाँकि किसी सुसमाचार में यह बात दिखती नहीं है, यह संभव है कि अपने पृथ्वी पर के समय में यीशु ने अपने प्रेरितों पर यह प्रगट किया।

"हम जो जीवित हैं"- मसीह के वापस आने पर कुछ जीवित होंगे। "हम" शब्द का अर्थ यह नहीं कि पौलुस अपने आपको भी उसमें देखता है। वह सामान्य रीति से यह कह रहा है। - मसीह के द्वितीय आगमन पर कुछ विश्वासी मर चुकेंगे, कुछ जीवित रहेंगे। जैसे हमें नहीं मालूम, पौलुस भी मसीह के आने के बारे में नहीं जानता था - 5:1-2; मत्ती 24:36 - इसलिए वह यह सोच भी नहीं सकता था, कि वह जीवित नहीं रहेगा (2 तीमु. 4:6-7)। यहाँ वह ऐसा कोई संकेत नहीं देता, कि यीशु का आना महासंकट से पहले होगा (मत्ती 24:21) या बाद में।

"आगे न बढ़ेंगे"- जो अभी भी जीवित हैं।

4:16 "स्वर्ग से"- प्रे.काम 1:11; 3:21; प्रका. 19:11.

"ललकार"- इस यूनानी शब्द का अर्थ है "बुलाया जाना" या "ज़ोर से आज्ञा देना" । विश्वासी चाहे कब्रों में हों या कहीं और, यीशु उन्हें बुलाएँगे - देखें यूहन्ना 5:28; यूहन्ना 11:43-44 से तुलना करें।

"प्रधान स्वर्गदूत"- मीकाईल (यहूदा 9; दानि. 10:13)। केवल मीकाईल ही नहीं किन्तु दूसरे अन्य स्वर्गदूत मसीह के साथ आएँगे - मत्ती 16:27; 25:31.

"तुरही"- 1 कुरि. 15:52; मत्ती 24:31 देखें।

"जो मसीह में मरे हैं"- उसी समय अविश्वासियों के जी उठने के बारे में पौलुस कुछ नहीं कहता है। प्रका. 20:4-6; फ़िलि. 3:11 से तुलना करे।

4:17 "बादलों"- दानि. 7:13; मत्ती 24:30; 26:64; प्रका. 1:7.

"बादलों पर उठा लिए जाएँगे"- उस क्षण क्या होगा यह बात पौलुस 1 कुरि. 15:52-53 में बताता है। फ़िलि. 3:20-21 भी देखें।

- 1 यूहन्ना 3:2. प्रायः विश्वासी "रैप्चर" की (जो एक लैटिन शब्द है; जिसका अर्थ है "ले जाया जाना", बात करते हैं।)।

"हवा में प्रभु से मिलें"- मत्ती 24:31 से तुलना करें। यहाँ पौलुस यह नहीं बताता कि इसके बाद क्या होगा - वह तुरन्त अपने लोगों के साथ वापस आएँगे या नहीं।

"सदा प्रभु के साथ"- यह एक अद्‌भुत लक्ष्य है, जिसकी ओर प्रत्येक विश्वासी चला जा रहा है । (5:10; यूहन्ना 14:3; कुल. 3:4; प्रका. 21:3; आदि)

4:18 "शान्ति" या "प्रोत्साहन"- यूनानी भाषा के शब्द में दोनों अर्थ लगाए जाते हैं। परमेश्वर के लोगों के प्रत्येक दुख में जो उन पर आ सकता है ये शब्द बड़ी शान्ति और प्रोत्साहन देते हैं। ये दुख अनेक प्रकार की निराशा, परखा जाना, सताव और दूसरी समस्याएँ हैं।

5:1 "समयों और युगों"- मत्ती 24:36; प्रे.काम 1:6-7.

5:2 "रात को चोर"- मत्ती 24:43-44; लूका 12:39-40. प्रका. 3:3; 16:15.

है, वैसे ही प्रभु का दिन आने वाला है।
3जब लोग कहते होंगे, कि कुशल है
और कुछ डर नहीं, तब उन पर अचानक
विनाश आ पड़ेगा। जैसे गर्भवती स्त्री पर
अचानक प्रसव की पीड़ा आती है, वैसे
ही उन के लिए भी दर्द का समय आएगा,
और वे किसी रीति से न बचेंगे। 4परन्तु
तुम तो अज्ञानता और बुराई में नहीं हो, कि
वह दिन तुम पर चोर की तरह आ पड़े।
5क्योंकि तुम सब ज्योति की संतान और
दिन की संतान हो। हम न रात के हैं, न
अंधकार के हैं। 6इसलिये हम दूसरों के
समान सोते न रहें, पर जागते और सावधान
रहें। 7क्योंकि जो सोते हैं, वे रात ही को
सोते हैं और जो मतवाले होते हैं, वे रात
ही को मतवाले होते हैं। 8परन्तु हम जो
दिन के हैं, विश्वास और प्रेम की झिलम
पहनकर और मुक्ति की आशा का टोप

"प्रभु का दिन"- प्रे.काम 2:20; 1 कुरि. 5:5; 2 थिस्स. 2:2; 2 पतर. 3:10. ये शब्द पुराने नियम से लिए गए हैं। यशा. 13:6,9 (2:12-18) योएल 1:15; 2:31. महासंकट काल जो प्रभु के दिन से पहले आएगा, इस से भिन्न है। मत्ती 24:29 और प्रका. 6:12-17 देखें और तुलना करें। 4:13-18 में पौलुस ने पुनरूत्थान और उठाए जाने के विषय में लिखा है। यहाँ वह इस बात का संकेत देता है कि जब वह उन्हें उस घटना के बारे में लिख रहा था, तो 'प्रभु के दिन' की बात कर रहा था। ऐसा लगता है कि वह यह सिखा रहा था, कि विश्वासियों के लिए मसीह का लौटना उस समय के प्रारम्भ में होता है जिसे प्रभु का दिन कहा गया है।

5:3 "कुशल"- यिर्म. 6:14; यहेज. 13:10 से तुलना करें।

"अचानक"- नीति. 6:15; 29:1; यशा. 29:5-6 से तुलना करे। "बर्बादी" - फ़िलि. 3:19; 2 पतर. 3:7; 2 थिस्स. 1:8-9 प्रगट करता है, कि इस विनाश का अर्थ क्या है - प्रभु की उपस्थिति से सदाकाल के लिए निकाला जाना। गर्भवती पर जच्चा का दर्द अचानक होता है। इसी प्रकार से प्रभु के दिन को आने वाला विनाश कहा गया है।

5:4 ऐसा लगता है कि पौलुस यह सिखा रहा है, कि मसीही विश्वासी जब तक प्रभु का दिन आरम्भ न हो, तब तक पृथ्वी पर रहेंगे। यदि उसको यह विश्वास नहीं था कि कुछ लोग यहाँ रहेंगे, तो वह यीशु के आने पर अचम्भित न होने की बात क्यों कहता? यदि वह यह विश्वास करता था कि उस समय कोई नहीं रहेगा, तो यह बताने का एक अच्छा अवसर था, बजाए इसके कि उन्हें "जागते रहने" (पद 6) के लिए कहा जाए।

"अन्धकार में नहीं"- प्रे.काम 26:18; 2 कुरि. 4:6; कुल. 1:13.

"आ पड़े"- जो लोग चोर की राह देख रहे है, उस समय आश्चर्यचकित नहीं होगे जब वह आता है। विश्वासी ज्योति में हैं और स्वर्ग से परमेश्वर के पुत्र के प्रगट होने की प्रतीक्षा कर रहे हैं - तीतुस 2:13. यदि ऐसा है तो वे इस घटना के घटने पर अचम्भे में नहीं पड़ सकते। लोगों को दिनांक बताने का प्रयत्न नहीं करना चाहिए। बाईबल उनके आने और युग के अन्त के कुछ चिन्ह देती है ताकि विश्वासी इसे आते हुए देख सकें (इब्रा. 10:25; 2 थिस्स. 2:3-4; प्रे.काम 2:20; मत्ती 24:29,33)।

5:5 "ज्योति की सन्तान"- इफ़ि. 5:8; यूहन्ना 12:36; मत्ती 5:14.

5:6 "सोते न रहें"- सोते हुए लोग यह नहीं जानते कि क्या हो रहा है या क्या होगा।

"जागते"- मत्ती 24:42-43; 25:13.

"सावधान रहें"- यूनानी शब्द का अर्थ "आत्म सयंम" - भी हो सकता है - प्रे.काम 24:25; गल. 5:23; 1 पतर. 4:7; 5:8; 2 पतर. 1:6.

5:7 रोमि. 13:13-14; 2 पतर. 2:13.

5:8 "हम जो दिन के हैं"- पद 5. विश्वासी उस नए दिन के है जो मसीह के आने पर आएगा - 2 पतर. 1:19; प्रका. 22:16. वे पहले ही से दिन की ज्योति में चलते हैं।

"झिलम"- इफ़ि. 6:14 की झिलम से तुलना करें जहाँ इस धार्मिकता कहा गया है। सभी मसीही गुण आपस में जुड़े हुए है। "मसीह" - को पहनने से सभी को पहना जाता है। रोमि. 13:14 और इफ़ि. 4:24; 6:13 के नोट्स देखे।

"टोप"- इफ़ि. 6:17 देखें।

पहनकर सावधान रहें,

9क्योंकि परमेश्वर ने हमें सज़ा के लिये नहीं, परन्तु इसलिये ठहराया है, कि हम अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा मुक्ति प्राप्त करें। 10वह हमारे लिये इस कारण मरे, कि हम चाहे जागते हों, चाहे सोते हों, सब मिलकर उन्हीं के साथ जियें।

11इस कारण एक दूसरे को शान्ति दो और एक दूसरे की उन्नति के कारण बनो, जैसा कि तुम करते भी हो। 12हम तुम से बिनती करते हैं, कि जो तुम में मेहनत करते है और प्रभु में तुम्हारे अगुवे हैं और तुम्हें शिक्षा देते हैं, उनकी कही बातों पर ध्यान दो। 13उनके काम के कारण प्रेम के साथ उनको बहुत ही आदर के योग्य समझो। आपस में मेल-मिलाप से रहो।

14हे भाइयो बहनो, हम तुम्हें समझाते हैं कि जो ठीक चाल नहीं चलते, उनको समझाओ। डरने वालों को हिम्मत दो, कमज़ोरों को संभालो, सब की ओर सहनशीलता दिखाओ। 15सावधान! कोई किसी से बुराई के बदले बुराई न करे, लेकिन सदा भलाई करने पर तत्पर रहो। आपस में और सब से भी भलाई ही की कोशिश करो।

16सदा खुश रहो। 17निरन्तर प्रार्थना में लगे रहो। 18हर बात में आभार प्रकट करते रहो, क्योंकि तुम्हारे लिये मसीह यीशु में

5:9 "सज़ा"- 1:10 के नोट्स देखें। "सज़ा", "उद्धार" के विपरीत है (यह महासंकट काल से बचना नहीं है) एक का अर्थ है पाप और पापियों पर परमेश्वर का क्रोध, दूसरे का अर्थ है पाप से स्वतंत्रता। इसलिए यह परमेश्वर के उस क्रोध से छूटना है जो पाप पर आता है।

5:10 "हमारे लिए इस कारण मरे"- यूहन्ना 10:15; रोमि. 5:8; 1 पतर. 3:18. यहाँ जागते, सोते रहने का अर्थ है जीवित रहना या मरना (3:13)।

"सब मिलकर उसी के साथ जियें"- जीवित विश्वासी मसीह के जीवन के भागीदार हैं; और संगति करते हैं। (रोमि. 6:5-8; 1 यूहन्ना 1:3)। जो विश्वासी स्वर्ग पहुँच चुके हैं वे उसकी उपस्थिति में हैं - 2 कुरि. 5:8; फ़िलि. 1:23.

5:11 "शान्ति"- 4:18 यह प्रत्येक विश्वासी का कर्तव्य और आशीष है।

"एक दूसरे की उन्नति"- रोमि. 14:19; 15:2; 1 कुरि. 14:3-5,12,17,26; इफ़ि. 4:29.

5:12-13 "प्रभु में"- मरकुस 9:50; रोमि. 12:16; 2 कुरि. 13:11; इफ़ि. 4:3; फ़िलि. 2:2; इब्रा. 12:14.

"तुम्हारे अगुवे हैं"- 1 तीमु. 5:17; इब्रा. 13:17; 1 पतर. 5:1-3.

5:14 "कमज़ोरों" "निर्बलों"- स्थानीय कलीसियाओं में हर प्रकार के विश्वासी पाए जाते है। किसी को भी तुच्छ नहीं समझा जाना चाहिए।

5:15 "बुराई के बदले बुराई"- रोमि. 12:17-21.

5:16 "खुशी"- फ़िलि. 3:1; 4:4; रोमि. 12:12; हबक्कू 3:17-18.

5:17 दूसरों को प्रार्थना करते रहने के लिए उकसाने से अधिक उसने स्वयं अधिक प्रार्थना की। वह स्वयं एक आदर्श था - 1:3; 2:13; रोमि. 1:9-10; इफ़ि. 6:18; कुल. 1:3; 2 तीमु. 1:3. वह प्रार्थना की सामर्थ और आशीष के बारे में जानता था। चाहे वह किसी भी कार्य में व्यस्त क्यों नहीं था, अपने मन को प्रभु के साथ रखता था। जब कोई व्यक्ति दूसरे कामों में लगा रहता है, सदैव यह संभव नहीं होता है कि प्रार्थना कर सके या मुँह से कुछ कहे। प्रार्थना अपने हृदय को परमेश्वर की ओर उठाना है चाहे ओठों से शब्द न भी निकलें। प्रार्थना से सम्बन्धित नोट्स और अन्य पद उत्पत्ति 18:32; मत्ती 6:5-13; 7:7-12; मरकुस 11:24; लूका 11:1-13; 18:1-8; रोमि. 8:26-27; इफ़ि. 1:17; 6:18; फ़िलि. 4:6-7; कुल. 1:9; इब्रा. 11:6; याकूब 1:5-8; 5:16-18; 1 यूहन्ना 5:14-15; भजन 66:18.

5:18 इब्रा. 13:15; कुल. 3:17; फ़िलि. 4:6; इफ़ि. 5:20; भजन 50:14; 113:1; लैव्य. 7:12-13 । "हर बात में" का अर्थ है, चाहे परिस्थितियाँ सुखदायक हों या नहीं, सुरक्षा हो या खतरे, आसान जीवन हो या कठिन। जीवन की प्रत्येक परिस्थिति में सदा ऐसी बाते हैं, जिनके लिए धन्यवाद दिया जा सकता है। हमें इस बात का अभ्यास करना चाहिए। "परमेश्वर की यही इच्छा है" कुछ बातों में शायद हम परमेश्वर की इच्छा न जानें, किन्तु धन्यवाद देना परमेश्वर की इच्छा है।

परमेश्वर की यही इच्छा है।
19आत्मा को न बुझाओ। 20भविष्यवाणियों
को तुच्छ न मानो। 21सब बातों को परखो,
जो अच्छी है उसे पकड़े रहो। 22सब प्रकार
की बुराई से बचे रहो।
23शान्ति के परमेश्वर आप ही तुम्हें पूरी
तरह से पवित्र करें और तुम्हारे आत्मा, प्राण
और देह हमारे प्रभु यीशु मसीह के आने
तक निर्दोष रहें। 24तुम्हारे बुलाने वाले,
सच्चे हैं और वह ऐसा ही करेंगे।
25हे भाइयो, हमारे लिये प्रार्थना करो।
26सब भाइयों को सलाम। 27मैं तुम्हें आदेश
देता हूँ, कि यह पत्र सब भाइयों को पढ़कर
सुनाया जाए।
28हमारे प्रभु यीशु मसीह की असीम कृपा
तुम पर बनी रहे।

5:19 "आत्मा को न बुझाओ"- परमेश्वर का आत्मा विश्वासियों के हृदय में गरमाहट, ज्योति और आत्मिक जोश देता है। किन्तु यह संभव है कि पाप, लापरवाही, हृदय की प्रार्थना-हीनता और आभार हीनता के कारण हम हृदय की आग को बुझा दें। इफ़ि. 4:30.

5:20 "भविष्यद्वाणियाँ"- इसका अर्थ है कलीसिया (चर्च) के उन लोगों के द्वारा भविष्यद्वाणियाँ, जिनके पास यह आत्मिक योग्यता थी। देखें रोमि. 12:6; 1 कुरि. 12:10,28; 14:3.

5:21 "परखो"- 1 कुरि. 14:29; 1 यूहन्ना 4:1. प्रत्येक भविष्यद्वक्ता या भविष्यद्वाणी प्रभु की ओर से नहीं है - मत्ती 7:15; 2 पतर. 2:2; यिर्म. 14:14. प्रत्येक बात जिसे लोग कहते हैं, परमेश्वर के वचन के प्रकाश में मापी जानी चाहिए।

5:22 जिन बुरी बातों को लोग नहीं करना चाहते है, उन से बचे रहना कुछ लोग अच्छी तरह से जानते हैं। कुछ भी बुरा करने में विश्वासियों को दिलचस्पी नहीं लेनी चाहिए।

5:23 "शान्ति का परमेश्वर"- रोमि. 15:33; 16:20. 1 कुरि. 14:33; फ़िलि. 4:9; 2 थिस्स. 3:16; इब्रा. 13:20.

"पूरी तरह"- जब कि पौलुस उनकी अधूरी पवित्रता के लिए प्रार्थना नहीं करता, हमें स्वयं के लिए या किसी दूसरे विश्वासी के लिए भी यह प्रार्थना नहीं करनी चाहिए। अधूरी पवित्रता अधूरी अपवित्रता है। मत्ती 5:48; 1 कुरि. 1:2; 2 कुरि. 7:1.

"पवित्र करे"- यूहन्ना 17:17-19 के नोट्स देखे।

"निर्दोष"- 3:13 की पद देखे।

5:24 "सच्चा"- व्यव. 7:9; 32:4; 1 कुरि. 10:13; 2 थिस्स. 3:3; 2 तीमु. 2:13; तीतुस 1:2; 1 यूहन्ना 1:9.

"वह ऐसा ही करेंगे"- 1 कुरि. 1:8-9; फ़िलि. 1:6 देखें।

थिस्सुलुनीके के सभी विश्वासियों से यह प्रतिज्ञा की गयी थी, (वर्तमान के सब विश्वासियों से भी) कुछ एक विशेष पवित्र और आत्मिक समझदारी रखने वालों लोगों से नहीं। 5:2 5; रोमि. 15:30; इफ़ि. 6:19.

5:26 "सलाम"- रोमि. 16:16.

5:27 इस पत्र में दिए सत्य की आवश्यकता परमेश्वर के सम्पूर्ण परिवार को है। प्रेरित के निर्देषों की भी।

5:28 रोमि. 1:7; 16:20 ।